शोध सारांश

वर्तमान समाज समय से मुठभेड़ करता हुआ नज़र आता है | भारतीय समाज लगातार नई-नई समस्याओं से जूझता आ रहा है | इनमें राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, साम्प्रदायिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याएँ प्रमुख हैं | वर्तमान समय में आम आदमी अपनी अस्मिता बचाने के लिए संघर्ष कर रहा है और उसका यह संघर्ष अपने ही लोगों से है | समाज में व्याप्त इन सभी प्रकार की विसंगतियों को जब एक साहित्यकार का संवेदनशील हृदय सहन नहीं कर पाता तब उसकी कलम से शब्दों के रूप में वे सभी समस्याएँ आकार ग्रहण करती हैं |

ग़ज़ल उर्दू व फ़ारसी की प्रसिद्ध काव्य विधा है, जिसमें भारतीय कविता की भांति लय, संगीत, मधुरता और लालित्य विद्यमान है | ग़ज़ल की निरंतर बढ़ती लोकप्रियता के कारण हिंदी साहित्य में यह एक नई काव्य विधा के रूप में उभर कर हमारे सामने आयी है | ग़ज़ल ऐसी काव्य विधा है जिसके माध्यम से समाज, आम जनजीवन, विचार, भाव जैसे अनंत विषयों को अभिव्यक्त किया जा सकता है | समकालीन उर्दू ग़ज़लकार पं० रामकृष्ण 'आमिल' और हिंदी ग़ज़लकार ज्ञानप्रकाश विवेक ने अपने ग़ज़ल संग्रह 'साँसों की सरगम' एवं 'गुफ़्तगू अवाम से है' में इन सभी विषयों को अभिव्यक्त किया है |

अपने शोध कार्य में मैंने पाया कि जहाँ उर्दू ग़ज़लकार रामकृष्ण 'आमिल' ने ग़ज़ल संग्रह 'साँसों की सरगम' में उर्दू के परम्परागत प्रतीकों और बिंबों के माध्यम से नवीन कथ्य को अभिव्यक्त किया है वहीं हिंदी ग़ज़लकार ज्ञानप्रकाश विवेक ने अपने ग़ज़ल संग्रह 'गुफ़्तगू अवाम से है' में नवीन प्रतीकों और बिंबों के माध्यम से नवीन कथ्य को अभिव्यक्त किया है | ज्ञानप्रकाश विवेक और पं० रामकृष्ण 'आमिल' दोनों ग़ज़लकार दो भाषाओं, हिंदी एवं उर्दू के रचनाकार हैं। इन्होंने अपने ग़ज़ल संग्रह 'गुफ़्तगू अवाम से है' एवं 'साँसों की सरगम' में बदलते सामाजिक मूल्यों, भूख, बेकारी, मँहगाई, धोखाधड़ी, अन्याय, भ्रष्टाचार, अमानवीयता, अजनबीपन, द्वेष, ख़ून-ख़राबा, मानवीयता,

एकता जैसे विषयों को अपनी निगाह के दायरे में लिया है ।उर्दू व हिंदी ग़ज़ल का शिल्प विधान बेशक भिन्न- भिन्न हो परन्तु इनका कथ्य एक सामान है |